कोई भी संस्कृति जड़ नहीं होती है। उसमें परिवर्तन और गतिशीलता पायी जाती है। मानव की आवश्यकताओं एवं सामाजिक तथा प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तन होने पर नवीन परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने के लिए संस्कृति में भी परिवर्तन होते हैं। जो संस्कृतियाँ गतिशील नहीं होतीं, वे विघटन और समाप्ति की ओर उन्मुख होती हैं। इसीलिए संस्कृति के गठन और मूल्यों में समय के साथ-साथ परिवर्तन होते रहते हैं। संस्कृति में परिवर्तन, परिवर्द्धन एवं संशोधन किस प्रकार होता है, इसे स्पष्ट करने के लिए तीन प्रकार के सिद्धान्त प्रचलित हैं— उद्विकासवाद, प्रसारवाद तथा परसंस्कृति-ग्रहण। उद्विकासवादी यह मानते हैं कि प्रत्येक संस्कृति का स्वतः एक सीधी रेखा में उसी प्रकार उद्विकास हुआ है जैसे जीवों का। विश्व की सभी संस्कृतियाँ कुछ निश्चित स्तरों से होकर गुजरी हैं और उनमें विकास का एक ही नियम रहा है। प्रसारवादी यह मानते हैं कि मानव की निर्माण शक्ति सीमित है और उसमें अनुकरण और ग्रहण करने की शक्ति अनोखी है। अतः जब दो संस्कृतियाँ परस्पर सम्पर्क में आती हैं और एक समूह के सांस्कृतिक तत्व किसी अन्य सांस्कृतिक समूह द्वारा अपना लिये जाते हैं तो इसे प्रसार कहते हैं। किन्तु जब कुछ सांस्कृतिक तत्वों के स्थान पर बहुत सारे सांस्कृतिक तत्व अपना लिये जाते हैं तो उसे हम परसंस्कृति-ग्रहण कहते हैं। परसंस्कृति-ग्रहण करने वाले समूह की जीवन-विधि ही काफी कुछ बदल जाती है। हम यहाँ प्रसार और परसंस्कृति-ग्रहण की अवधारणा को स्पष्ट करेंगे, तत्पश्चात् भारत में इन प्रक्रियाओं द्वारा जनित सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों का उल्लेख करेंगे।

प्रसार
(DIFFUSION)

सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन में प्रसार की भूमिका महत्वपूर्ण है। चूँकि मानव की आविष्कार की शक्ति सीमित है इसलिए एक स्थान पर किसी सांस्कृतिक तत्व का आविष्कार होता है तो प्रसार द्वारा ही वह अन्य स्थानों पर पहुँचता है। विश्व में अधिकांश सांस्कृतिक तत्वों का फैलाव 'प्रसार' के कारण ही

के जांघ की हड्डी को सुरक्षित रखा जाता है। स्मिथ इसे मिस्र के समीकरण का प्रसार मानते हैं। पत्थरों का स्मारक बनाना भी विश्व को मिस्र की ही देन है। पेरी मिस्रवासियों को 'सूर्यपुत्र' कहकर पुकारते हैं और उन्हें ही समस्त उच्च संस्कृति के जनक मानते हैं। इस सम्प्रदाय के लोगों ने मिस्र को ही सभ्यता का उद्गम स्थल माना है, अतः इसे पान-इजिप्शियन सम्प्रदाय भी कहते हैं।

इस सम्प्रदाय की आलोचना अनेक मानवशास्त्रियों ने इस आधार पर की है कि इनके विचार अवैज्ञानिक और संकीर्ण है। मिस्र को ही सभी संस्कृतियों का उद्गम स्थल मानना हास्यास्पद है। चूंकि स्मिथ लम्बे समय तक मिस्र में रहे, अतः उनके विचार पक्षपातपूर्ण हो गये। यदि वे मिस्र के स्थान पर भारत में रहे होते तो वे भारत को भी संस्कृति का उद्गम स्थल कह सकते थे। स्वतन्त्र आविष्कार को न मानना भी उचित नहीं है। कई ऐसे उदाहरण हैं जो यह प्रकट करते हैं कि कई सांस्कृतिक तत्वों का आविष्कार अलग-अलग स्थानों पर स्वतन्त्र रूप से ही हुआ है न कि उनका प्रसार। हड्डन का मत है कि बन्दूक का आविष्कार एशिया एवं अमरीका में स्वतन्त्र रूप से हुआ है। चिकित्सा तथा जादू में मुखाब का प्रयोग अमरीकन इण्डियन्स द्वारा ही सर्वप्रथम किया गया। जिस प्रकार से कई मानवशास्त्रियों ने भारत, एशिया तथा यूरोप में सभ्यता के मूल स्रोत को ढूंढने का प्रयास किया है उसी प्रकार से इलियट ने भी मिस्र को सभ्यता का केन्द्र माना है।

2. जर्मन प्रसारवादी या सांस्कृतिक ऐतिहासिक सम्प्रदाय (German or Kulture Kries School)

जर्मन-आस्ट्रेलियन सम्प्रदाय का दृष्टिकोण अधिक तर्कपूर्ण एवं परिष्कृत है। इन्होंने उद्विकास और प्रसार दोनों का मिश्रण किया है। इसके अगुवा फादर शिमिट (Schmidt) हैं तथा अन्य समर्थकों में एन्करमेन (Ankarman), एफ० ग्रेबनर (F.Graebner), ई० फॉय (E. Foy), आदि प्रमुख हैं। इस सम्प्रदाय को 'कल्चर क्रीज' (Kulture Kries) सम्प्रदाय भी कहते हैं जिसका अर्थ है 'सांस्कृतिक चक्र' या 'सांस्कृतिक घेरा'।

इन लोगों की मान्यता है कि प्रत्येक संस्कृति के प्रसार का एक घेरा होता है और हम ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर इस घेरे को ज्ञात कर सकते हैं। ब्रिटिश प्रसारवादियों की तरह जर्मन प्रसारवादी किसी एक ही स्थान को संस्कृति का उद्गम स्थान नहीं मानते वरन् उनकी मान्यता है कि भिन्न-भिन्न स्थानों पर संस्कृति का जन्म हुआ और फिर दूसरे स्थानों पर प्रसार हुआ है। इस प्रकार से इस सम्प्रदाय के लोग उद्विकास एवं प्रसार दोनों को ही स्वीकार करते हैं। समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर संस्कृति के तत्वों का जन्म होता रहा है और वे दूसरे स्थानों पर फैलते रहे हैं। यदि सांस्कृतिक तत्वों के इतिहास को ज्ञात करें तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि उनका उद्गम कहाँ हुआ है और वे किस स्थान से होकर प्रसारित हुए

Scanned with CamScanner

(6) प्रसार में विकल्प और चुनाव भी होता है। ग्रहण करने वाला समूह उन्हीं तत्वों को ग्रहण करता है जो उसके लिए उपयोगी होते हैं।

(7) विभिन्न संस्कृतियाँ एक-दूसरे के जितना अधिक निकट होंगी प्रसार की सम्भावनाएँ भी उतनी ही अधिक होंगी।

प्रसार के कारण (Causes of Diffusion)

किसी समाज और संस्कृति में प्रसार निम्नांकित कारणों से घटित होता है—

(1) मानव की आविष्कार की शक्ति एवं क्षमता सीमित है, अतः वह दूसरों से संस्कृति के तत्वों को ग्रहण करता है।

(2) मानव में अनुकरण एवं ग्रहण करने की असीम क्षमता है। उसी के परिणामस्वरूप संस्कृति का प्रसार सम्भव है।

(3) प्रसार कम खर्चीला और आसान भी होता है, यह आविष्कार की तुलना में सस्ता होता है।

(4) आविष्कार के लिए जिन अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है, वे सभी समाजों में उपलब्ध नहीं होतीं, अतः लोग प्रसार द्वारा ही दूसरे समाजों से आविष्कार एवं विभिन्न सांस्कृतिक तत्व ग्रहण करते हैं।

(5) संस्कृति एवं मानव दोनों ही गतिशील हैं, अतः जब मानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है, तो अपनी संस्कृति को भी ले जाता है, जिससे सांस्कृतिक प्रसार भी होता है।

प्रसारवादी सम्प्रदाय
(DIFFUSIONISTIC SCHOOL)

संस्कृति के उद्विकासवादी सिद्धान्त की वैज्ञानिक आलोचना के परिणामस्वरूप ही बीसवीं सदी के प्रारम्भ में प्रसारवादियों ने उद्विकासवादियों के एकमार्गी उद्विकास, मानव की मानसिक एकता एवं स्वतन्त्र आविष्कार के तर्कों का खण्डन किया और कहा कि मानव की आविष्कार करने की क्षमता सीमित है। विभिन्न संस्कृतियों में जब हम समान सांस्कृतिक तत्व देखते हैं तो इसका कारण स्वतन्त्र रूप से आविष्कार न होकर प्रसार है। मानव में अनुकरण करने एवं ग्रहण करने की शक्ति असीमित है। अतः जब भी दो सांस्कृतिक समूह सम्पर्क में आते हैं तो उनमें एक दूसरे के रीति-रिवाजों, प्रथाओं, धर्म, कला, भौतिक वस्तुओं, भाषा, वस्त्र, बर्तन, भोजन आदि का आदान-प्रदान होता है। अधिक शारीरिक निकटता पर सांस्कृतिक प्रसार के भी अधिक अवसर होते हैं। इसके परिणामस्वरूप एक स्थान पर आविष्कृत सांस्कृतिक तत्व दूसरे स्थानों पर फैलते हैं, इसे ही प्रसारवाद के नाम से जाना जाता है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन करने वाले व्यक्ति अपनी संस्कृति को दूसरे स्थान पर फैलाने में योग देते हैं। प्रसार को स्पष्ट करने के लिए प्रसारवादियों ने कई ऐतिहासिक उदाहरण भी दिये।

Scanned with CamScanner

हुआ है। घड़ी, पेन, रेडियो, टेलीविजन, प्रौद्योगिकी, रेल, मोटर, वायुयान, अदालत, फौज और हजारों-लाखों सांस्कृतिक तत्व प्रसार के द्वारा ही सारे विश्व में फैल गये हैं।

प्रसार की परिभाषा (Definition of Diffusion)

प्रसार को परिभाषित करते हुए **गिलिन एवं गिलिन** लिखते हैं, "एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति या एक समाज से दूसरे समाज में संस्कृति के फैलाव को ही 'प्रसार' कहा जाता है।"[1]

मैरिल और एल्ड्रिज के अनुसार, "भौतिक और अभौतिक संस्कृति के कुछ तत्वों का एक समाज से दूसरे समाज में या एक ही समाज में गति करना ही प्रसार है।"[2]

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि प्रसार वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सांस्कृतिक तत्वों का फैलाव एक समाज से दूसरे समाज में या एक ही समाज में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक होता है।

प्रसार की विशेषताएँ (Characteristics of Diffusion)

प्रसारवादियों ने प्रसार की निम्नांकित विशेषताओं का उल्लेख किया है :

(1) कोई भी सांस्कृतिक समूह दूसरे सांस्कृतिक समूह की संस्कृति या सांस्कृतिक तत्वों को उसी समय अपनायेगा जब वे उसके लिए अर्थपूर्ण और उपयोगी होंगे।

(2) प्रसार के दौरान सांस्कृतिक तत्व अपने मूल रूप में नहीं रह पाते वरन् उनमें ऐसे परिवर्तन आ जाते हैं जिनकी सहायता से वे अपने आपको नये पर्यावरण के अनुरूप बना सकें।

(3) प्रसार साधारणतः 'उच्च' संस्कृति से 'निम्न' संस्कृति या विकसित से अविकसित संस्कृति की ओर होता है।

(4) सांस्कृतिक प्रसार के कारण ग्रहण करने वाले समूह में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन भी घटित हो सकते हैं। कभी-कभी तो प्रसारित होने वाले तत्व बिना किसी प्रकार की हलचल मचाये दूसरे समूह में घुल-मिल जाते हैं और कभी-कभी ये कई परिवर्तनों के लिए उत्तरदायी होते हैं।

(5) सांस्कृतिक प्रसार में कुछ बाधाएँ भी हैं, जैसे यातायात और संचार का अभाव, समुद्र, रेगिस्तान, पहाड़, दलदल एवं सम्पर्क का अभाव आदि।

---

1 "The spread of culture from individual to individual or from one society to another is called diffusion."—Gillin and Gillin, *Cultural Sociology*, p. 179.

2 "Diffusion is the movement from one society to another or within the same society of some element of meterial or non-meterial culture." Merrill and Eldridge, *Culture and Society*, p. 105.

Scanned with CamScanner

है चूँकि यह सम्प्रदाय सांस्कृतिक तत्वों के इतिहास को ज्ञात करने पर जोर देता है इसलिए इसे ऐतिहासिक प्रसारवादी सम्प्रदाय भी कहते हैं।

ग्रैबनर ने सांस्कृतिक प्रसार को ज्ञात करने की दो विधियों का उल्लेख किया है—एक 'स्वरूप' (Form) और द्वितीय 'संख्या' (Quantity)। जब कभी भी हमें दो सांस्कृतिक समूहों में संस्कृति-तत्वों की समानता दिखायी दे तो हमें यह ज्ञात करना चाहिए कि उनके स्वरूप एवं संख्या में कितनी समानता है। इसी आधार पर हम यह ज्ञात कर सकेंगे कि प्रसार हुआ है या नहीं। जितनी अधिक समानताएँ पायी जायेंगी प्रसार की उतनी ही अधिक सम्भावना है।

इस सिद्धान्त की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि यह सिद्धान्त हमें प्रसार "क्या है" का ज्ञान कराता है किन्तु यह नहीं बताता कि 'प्रसार' क्यों होता है।

3. अमरीकन प्रसारवादी (American Diffusionists)

इस सिद्धान्त के प्रमुख नेता अमरीका के मानवशास्त्री फ्रैंज बोआस (Franz Boas) तथा क्लार्क विसलर (Clark Wissler) है। उन्होंने सांस्कृतिक प्रसार क्यों होता है को प्रकट करने का प्रयत्न किया और जर्मन प्रसारवादियों की कमी को दूर किया। इन विद्वानों ने संस्कृति-तत्वों की व्याख्या करके उनके मिलन और आत्मसात का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया। फ्रैंज बोआस ने उत्तरी अमरीका को विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में विभक्त कर वहाँ की खाद्य-सामग्री, भाषा, धर्म, सामाजिक संगठन, गृह निर्माण कला आदि का अध्ययन किया और एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में होने वाले प्रसार का उल्लेख किया। विसलर ने भी बोआस की इस अध्ययन पद्धति को अपनाया और अमरीका तथा अफ्रीका को विभिन्न सांस्कृतिक एवं भौगोलिक क्षेत्रों में विभक्त कर उनका अध्ययन किया। विसलर की मान्यता है कि विशिष्ट सांस्कृतिक तत्वों का जन्म उस संस्कृति केन्द्र में ही होता है और धीरे-धीरे वह बाहर की ओर फैलता है प्रसार के दौरान सांस्कृतिक तत्व पर्यावरण के अनुसार परिवर्तित होते हैं। प्रमुखतः अभौतिक तत्वों में अधिक परिवर्तन होते हैं। सीमा पर पहुँचते-पहुँचते वे हल्के पड़ने लगते हैं और उन पर दूसरे सांस्कृतिक समूहों का प्रभाव पड़ने लगता है। जहाँ दो सांस्कृतिक समूहों की सीमाएँ मिलती हैं वहाँ दोनों ही संस्कृतियों के तत्वों का मिश्रण देखा जा सकता है। ऐसे क्षेत्र को विसलर सीमान्त-संस्कृति क्षेत्र (Marginal area) कहते हैं। विसलर की मान्यता है कि पहाड़, दलदल, समुद्र, रेगिस्तान, घने जंगल, आदि सांस्कृतिक प्रसार में बाधा पैदा करते हैं।

परसंस्कृति-ग्रहण
(ACCULTURATION)

प्रसार में संस्कृति के कुछ तत्व ही एक समाज से दूसरे समाज को हस्तान्तरित होते हैं जबकि परसंस्कृति-ग्रहण में कई सांस्कृतिक तत्वों का हस्तान्तरण होता है और यहाँ तक कि परसंस्कृति-ग्रहण करने वाले समूह की जीवन-विधि ही बदल जाती है। प्रसार के लिए दो सांस्कृतिक समूहों का निकट आना आवश्यक नहीं है

Scanned with CamScanner

प्रश्न उठता है कि वह स्थान कौन-सा है जहाँ से सभी स्थानों पर सांस्कृतिक प्रसार हुआ ? दूसरे शब्दों में, सांस्कृतिक प्रसार के केन्द्र कौन-से हैं ? इस प्रश्न पर प्रसारवादियों में मत भिन्नता है जिसके परिणामस्वरूप प्रसारवादियों में तीन सम्प्रदाय बन गये। हम तीनों सम्प्रदायों का यहाँ संक्षेप में उल्लेख करेंगे।

1. ब्रिटिश प्रसारवादी या पान-इजिप्शियन सम्प्रदाय (British Diffusionists or Pan Egyptian School)

अंग्रेज-प्रसारवादी सम्प्रदाय मानवशास्त्रीय इतिहास में सबसे बाद में आया और सबसे पहले लुप्त भी हो गया। इस सम्प्रदाय ने मानवशास्त्र में भीषण विवाद को जन्म दिया। इलियट-स्मिथ इस सम्प्रदाय के संस्थापक थे और डब्ल्यू. जे. पैरी (W. J. Perry) उनके समर्थक। स्मिथ कैरियो विश्वविद्यालय में शरीर रचनाशास्त्र (Anatomy) के प्रोफेसर एवं विशेषज्ञ थे। उन्होंने अपने अध्ययन एवं अनुसन्धान के दौरान लम्बे समय तक मिस्र में निवास किया। आपने 'प्राचीन इजिप्शियन' (The Ancient Egyptian) एवं 'माईग्रेशन ऑफ अर्ली कल्चर' (The Migration of Early Culture) नामक पुस्तकें प्रकाशित की। इन रचनाओं में आपने मिस्र को ही प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र बताया। स्पष्ट है कि वे मिस्र की सभ्यता से बहुत प्रभावित हुए। अपने अध्ययन के द्वारा उन्होंने यह बताने का प्रयास किया कि भूमध्यसागरीय प्रदेशों, अफ्रीका, भारत, इण्डोनेशिया, पोलीनेशिया तथा अमरीका में भी संस्कृति का प्रसार मिस्र से ही हुआ है और मिस्र में संस्कृति का जन्म ईसा से लगभग चार हजार वर्ष पूर्व हुआ। स्मिथ की मान्यता है कि विश्व की कला तथा हस्तकला, सामाजिक तथा राजनीतिक संगठन, विश्वास एवं संकेतवाद अधिकतर ममाले की सहायता से सड़ने से बचाने की प्रथा से विकसित हुए है। मिस्र ही संस्कृति का केन्द्र स्थल क्यों रहा ? इसका उत्तर यह है कि जिस प्रकार से पेड़ पौधों और जीव-जन्तु के जन्मने और फलने-फूलने के लिए उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार संस्कृति के फलने-फूलने के लिए भी अनुकूल पर्यावरण चाहिए और यह पर्यावरण मिस्र में ही उपलब्ध था।

पैरी ने अपनी पुस्तक 'दी चिल्ड्रन ऑफ दि सन (The Children of the Sun) में इस सम्प्रदाय का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि लोगों में यह विश्वास कि "शासक सूर्य से अवतरित होता है," मिस्र की ही देन है। ममीकरण, पिरामिड, स्वर्ण तथा मोतियों को अधिक महत्व देना, आदि भी विश्व को मिस्र की सभ्यता की ही देन है। आपकी मान्यता थी कि मानव-जाति की आविष्कार करने की क्षमता लगभग शून्य है। वे स्वतन्त्र रूप से आविष्कार होने की बात को भी स्वीकार नहीं करते, वरन् मिस्र को ही संस्कृति का उद्गम स्थल मानते हैं। स्मिथ एवं पैरी ने बताया कि आस्ट्रेलिया में प्रचलित टोटमवाद तथा कम्बोडिया और अमरीकी इण्डियन जातियों में प्रचलित पिरामिड निर्माण कला भी मिस्र से ही वहाँ प्रसारित हुई है। अफ्रीका में यह प्रथा है कि अनुष्ठानों में प्रयोग के लिए राजा

Scanned with CamScanner

कि परसंस्कृति-ग्रहण के लिए दो सांस्कृतिक समूहों का प्रत्यक्ष एवं निरन्तर
के आवश्यक है। संस्कृति संवर्धन को स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों ने संस्कृति
ग का सहारा लिया है। हम यहाँ पहले परसंस्कृति-ग्रहण की अवधारणा को
ट करेंगे और उसके बाद परसंस्कृति-ग्रहण के कारण भारतीय समाज में होने
न सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों का उल्लेख करेंगे।

परसंस्कृति-ग्रहण का अर्थ एवं परिभाषा
(DEFINITION OF ACCULTURATION)

परसंस्कृति-ग्रहण को परिभाषित करते हुए डॉ० दुबे लिखते हैं, "दो संस्कृतियों सम्पर्क की स्थिति में यदि एक संस्कृति दूसरी संस्कृति के तत्वों को अपनी इच्छा या किसी दबाव से ग्रहण करे तो इस प्रक्रिया को हम परसंस्कृति-ग्रहण कहेंगे।"

मजूमदार एवं मदान के अनुसार, "जब एक संस्कृति के प्रभाव से दूसरी
कृति की सम्पूर्ण जीवन-पद्धति परिवर्तन प्रक्रिया के बीच में होती है तब इस प्रक्रिया
। परसंस्कृति-ग्रहण कहा जाता है।"[2]

गिलिन एवं गिलिन लिखते हैं, परसंस्कृति-ग्रहण से हमारा तात्पर्य उस प्रक्रिया
है जिसमें भिन्न संस्कृतियों वाले समाज निकट एवं लम्बे सम्पर्क के कारण
रिवर्तित होते हैं, किन्तु इसमें दोनों संस्कृतियों का पूर्ण मिश्रण नहीं होता है।"[3]

हरस्कोविट्स कहते हैं, यदि प्रसार 'प्राप्त सांस्कृतिक सम्प्रेषण' (achieved
ultural transmission) है तो परसंस्कृति-ग्रहण 'संस्कृति सम्प्रेषण की प्रक्रिया'
chieved cultural transmission in process) है।[4]

सन् 1936 में रेडफील्ड, लिंटन और हरस्कोविट्स ने परसंस्कृति-ग्रहण पर
ध के लिए मार्गदर्शन देने वाली एक परिषद् के स्मृति-पत्र में इसकी परिभाषा इस
कार से दी, "परसंस्कृति-ग्रहण में उन घटनाओं का समावेश होता है जोकि भिन्न
स्कृतियों वाले व्यक्तियों के समूह के निरन्तर प्रत्यक्ष सम्पर्क में आने से होती है, और
नके परिणामस्वरूप उनमें से एक या दोनों समूहों के मौलिक सांस्कृतिक प्रतिमानों
परिवर्तन घटित होते हैं।"[5]

---

[2] डॉ० दुबे, मानव तथा संस्कृति, पृ० 237।

[3] मजूमदार एवं मदान, सामाजिक मानवशास्त्र परिचय, पृ० 25।

[4] "We mean by acculturation the process whereby societies of different culture are modified through fairly close and long-continued contact, but without a complete blending of the two cultures."
—Gillin and Gillin, *Cultural Sociology*, p. 536.

हरस्कोविट्स 'सांस्कृतिक मानवशास्त्र' (हिन्दी अनु०), पृ० 470।

[5] "Acculturation comprehends those phenomena which result when groups of individuals having different cultures come into first hand contact with subsequent changes in the original cultural patterns of either or both groups."
—Redfield, Linton, and Herskovits, *Memorandum on the Study of Acculturation, American Anthropologist*, XXXVIII, 1936, p 149.

Scanned with CamScanner

(iii) परसंस्कृति-ग्रहण के कारण लोगों को लाभ एवं सुविधा हो।

(iv) जब नयी संस्कृतिग्रहण करने वालों के लिए उपयोगी हो।

(v) जब नयी संस्कृति को ग्रहण करने से लोगों की प्रतिष्ठा में वृद्धि

हो।

(vi) जब लोग अपनी ही संस्कृति से ऊब गये हों और उसमें परिवर्तन या

छोड़ने को उत्सुक हों तथा नयी संस्कृति आकर्षण का केन्द्र बनी हुई हो।

(vii) जब किसी संस्कृति से निरन्तर व प्रत्यक्ष सम्पर्क हो।

परसंस्कृति-ग्रहण के लिए गिलिन एवं गिलिन[2] ने तीन स्थितियों की बात कही —(1) लोगों का निकट एवं निरन्तर सम्पर्क होना चाहिए जिससे कि वे एक-दूसरे के सांस्कृतिक तत्वों से परिचित हो सकें। (2) परदेश जाकर रहने वाला समूह (immigrant group) भिन्न सांस्कृतिक समूह में जाकर रहता है। (3) विजेता ... पर अपनी संस्कृति थोपते हैं।

परसंस्कृति-ग्रहण की दशाएँ (Conditions of Acculturation)

दो भिन्न सांस्कृतिक समूहों में सम्पर्क होने मात्र से ही परसंस्कृति-ग्रहण नहीं होता है यद्यपि यह परसंस्कृति-ग्रहण की एक आवश्यक दशा है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य दशाएँ भी आवश्यक हैं; जैसे

(1) दोनों सांस्कृतिक समूहों में सम्पर्क हो और दोनों एक-दूसरे को प्रेरणा दें तथा एक-दूसरे के लिए प्रारूप (Model) का कार्य करें।

(2) सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों की सामाजिक प्रस्थिति भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्ति उन्हीं तथ्यों का हस्तान्तरण कर सकता है जिनसे वह परिचित है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति का प्रतिनिधित्व एक सीमा तक ही करता है, सम्पूर्ण संस्कृति का नहीं।

(3) परसंस्कृति-ग्रहण में परिवर्तन की इच्छा (desire for change) भी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। परिवर्तन चाहने की इच्छा होने पर परसंस्कृति-ग्रहण शीघ्र एवं तीव्र गति से होगा। परिवर्तन के प्रति उदासीन होने पर परसंस्कृति-ग्रहण में अवरोध पैदा होता है।

(4) परसंस्कृति-ग्रहण उन संस्कृतियों में अधिक एवं शीघ्र होगा जिनमें परस्पर साम्यता अधिक एवं अन्तर कम होता है। दो संस्कृतियों के उद्देश्यों में समानता होने पर भी परसंस्कृति-ग्रहण के अधिक अवसर रहते हैं।

परसंस्कृति-ग्रहण से सम्बन्धित शब्द—लिण्टन, रेडफील्ड, हर्सकोविट्स, हलोवेल तथा बील्स आदि ने परसंस्कृति-ग्रहण से सम्बन्धित कुछ अन्य शब्द भी दिये हैं। उदाहरण के लिए, हर्सकोविट्स लिखते हैं कि जब एक बढ़ता हुआ बच्चा अपनी ही सांस्कृतिक परम्पराओं का अनुपालन करना सीखता है तो इस प्रक्रिया को संस्कृति

---

2 Gillin and Gillin, *Op cit*, p.537.